

दुसरा उद्देश्य क्या है?

धर्म मूल रूप से लोगों को उनके द्वारा खुद पर लगाए गए कई प्रतिबंधों से राहत दिलाने के लिए आता है। उदाहरण स्वरूप, इस्लाम से पूर्व जाहिलियत के समय कई धिनौनी प्रथाएँ फैल गई थीं, जैसे लड़कियों को ज़िंदा दफ़न कर देना, कुछ प्रकार के खानों को मर्दों के लिए हलाल एवं औरतों के लिए हराम कर देना, औरतों को विरासत से महरूम कर देना, इसी तरह मुरदार खाना, व्यभिचार, शराब पीना, यतीम का माल खाना और सूदखोरी आदि दूसरे ग़लत कार्य।

लोगों के धर्म से विमुख होने और भौतिक विज्ञान को ही अपना लेने का एक प्रमुख कारण कुछ लोगों के यहाँ कुछ धार्मिक अवधारणाओं में अंतर्विरोधों का पाया जाना है। इसलिए, जो कारण तथा विशेषताएँ लोगों को सही धर्म अपनाने के लिए आमंत्रित करती हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण कारण उसका संतुलित होना है और यह बात हम इस्लाम धर्म में स्पष्ट रूप से पाते हैं।

अन्य धर्मों की समस्या, जो एक सच्चे धर्म की विकृति से उत्पन्न हुई है :

शुद्ध आध्यात्मिकता है, जो अपने अनुयायियों को वैराग्य तथा एकांतवाद के लिए प्रोत्साहित करती है

शुद्ध भौतिकवाद।

यह पिछले संप्रदायों और जातियों के बहुत-से लोगों को आम तौर पर धर्म से दूर करने का कारण बना।

साथ ही हम कुछ अन्य लोगों के यहाँ बहुत सारे ग़लत क़ानून, आदेश और प्रथाएँ पाते हैं, जिन्हें धर्म से जोड़ दिया गया है, ताकि लोगों को उनका पालन करने पर मजबूर किया जा सके, जिन्होंने लोगों को सही रास्ता एवं स्वाभाविक धर्म की अवधारणा से दूर कर दिया। इस तरह बहुत सारे लोग धर्म की सच्ची अवधारणा, जो मनुष्य की स्वाभाविक ज़रूरतों को पूरा करता है और जिससे कोई असहमत नहीं है, तथा बाप-दादा से विरासत में पाए कामों, आदतों, रस्म-रिवाजों एवं मानव निर्मित क़ानूनों के बीच अंतर करने की क्षमता खो देते हैं, जो बाद में धर्म को आधुनिक विज्ञान से बदलने की मांग को जन्म देता है।

सच्चा धर्म वह है जो लोगों को राहत देने और उनके दुखों को दूर करने और ऐसे नियमों और क़ानूनों को स्थापित करने के लिए आता है, जिनका पहला उद्देश्य लोगों के लिए आसानी पैदा करना है।

“और तुम अपने आप को क़त्ल न करो। बेशक अल्लाह तुमपर दया करने वाला है।” [199] [सूरा अल-निसा : 29]

“और अपने आपको विनाश में न डालो तथा नेकी करो, निःसंदेह अल्लाह नेकी करने वालों से प्रेम करता है।” [200] [सूरा अल-बक्रा : 195]

